



KURUKSHETRA UNIVERSITY KURUKSHETRA
[Established by the State Legislature Act XII of 1956]
(‘A+’ Grade, NAAC Accredited)

AQAR-2020-21

3.4.6: Documents for books and chapters in edited volumes
published per teacher during the Session 2020-21:

Name of Department: Fine Arts

Name of Teacher(s): Dr. Jaya Daronde

प्रागैतिहासिक काल से आधुनिक काल तक कला में प्राकृतिक संसाधन एवं तकनीक का प्रयोग

• जया शारीडे •


सारांश

प्राकृतिक विरासत सभी जीव जंतु एवं मनुष्य के लिये उपयोगी है। प्रागैतिहासिक काल से आज तक मनुष्य ने प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग किया है। चाहे व जीवन उदरनिर्वाह के लिये हो या कला के लिये। भारतीय कला में प्राकृतिक संसाधनों का बहुत लम्बी परंपरा और इतिहास है परंतु जलवायु परिस्थितियों के कारण बहुत कम प्रारंभिक उदाहरण बचते हैं। भारतीय चित्रकला के इतिहास का प्रत्यक्षदर्शी उदाहरण भित्ति-चित्रों से ही शुरू होता है और भित्ति-चित्रों की परंपरा जोगीमारा गुफा से शुरू होकर अजन्ता तक जाती है। परंतु मिर्जापुर, मानिकपुर, सिंगनपुर, होसंगाबाद, रायगड, पंचमढ़ी, भोपाल, रायसेन, ज्वालियर आदि विविध क्षेत्रों में स्थित गुफाओं की भित्तियों पर चित्र देखे जा सकते हैं एवं राजस्थान के महलों की सजावट में भित्ति चित्र बने हैं। जैसे आगरा एवं फतेहपुर सीकरी में अकबर ने, लाहौर और काश्मीर के राजकाय भवनों में जहांगीर ने, आमेर किला में सवाई जयसिंह ने व राजस्थान के प्रायः जितने भी किले, प्राचीन मंदिर हैं सभी में भित्ति चित्र निर्मित मिलते हैं। इस भित्ति चित्र के कई उदाहरण हम भारतीय कला इतिहास में देखते हैं। कला एक क्रिया है जो सहज और संवर्धित है। यह प्रकृति की प्रकृति से भिन्न तथा विपरीत है। कला प्रकृति को नियन्त्रित करने वाली एक बौद्धिक पद्धति है। मानवीय क्रिया कलाओं की दृष्टि से कला का क्षेत्र शिल्प, स्थापत्य, उद्योग, औषधि-विज्ञान, धर्म एवं शिक्षा तक विस्तृत है। प्रत्येक कला अपने अनुकूल उपकरणों व विधियों को जन्म देती है। इन्हीं विधियों को हम विभिन्न 'शैली'

• अविस्टेंट प्रोफेसर, ललित कला विभाग, कुतक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुतक्षेत्र, हरियाणा

शिवम

संसाधन प्रबंधन पुस्तक गुणोत्तम



शिवम



श्री मनोज कुमार

अंतरराष्ट्रीय स्तरावधि में मान्य लेखक श्रीमान् कृषि विज्ञान विभाग में अन्वेषण कार्य के साथ-साथ जीवों की प्राकृतिक शक्तों एवं पर्यावरण के संज्ञान को विस्तार प्राप्त करने में।

संसाधन का परिचय

परिचय व संसाधनों को प्रयोग करने के लिए विभिन्न विभागों में अन्वेषण कार्य के साथ-साथ जीवों की प्राकृतिक शक्तों एवं पर्यावरण के संज्ञान को विस्तार प्राप्त करने में।

पुस्तक का परिचय

प्रस्तुत पुस्तक संसाधन प्रबंधन एवं पर्यावरण में प्राकृतिक संसाधन व सतत विकास के विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया है। जिसमें प्रमुख प्राकृतिक संसाधन एवं सतत विकास, स्वीकर जलमय, स्वस्थता एवं आर्थिक प्रबंधन, पर्यावरण प्रदूषण एवं स्वास्थ्य, विद्युत शक्ति, पर्यावरण शिक्षण एवं जागरूकता, सतत विकास के लक्ष्य एवं भारत, महिला एवं प्राकृतिक संसाधन संरक्षण, नदी-शीतल जल की शीत, प्राकृतिक संसाधन और आर्थिक विकास, जलवायु कृषि एवं प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका आदि हैं।

इस पुस्तक में सामंजस्य अर्थशास्त्र, स्वस्थता, स्वास्थ्य एवं सामुदायिक विकास, जल, स्वस्थता, स्थिति विचारों महाशक्ति का योगात्मक-विकास, विकास का अनुमानित विशय-एक ही सुविचार और अलसीत में, परिचय महाशक्ति, प्रगतिशीलता, काल में प्राकृतिक काल तक काल में प्राकृतिक संसाधन एवं तकनीक का प्रयोग, समाधान एवं सतत विकास, सतत विकास की अन्वेषण तथा अनुपालन, पर्यावरण प्रदूषण में आनुवांसी लोकात्मता के विचारण, विशय एवं प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका एवं सामुदायिक एवं प्राकृतिक सतत, पर्यावरण प्रकृत का स्वस्थ, अस्थित समथ में पर्यावरण संरक्षण, प्रगतिशीलता की प्रकृति आवश्यकता, पर्यावरण असंतुलन - मानव अस्थित को स्वस्थता, शीतक मूल्य और पर्यावरण, पर्यावरण संरक्षण में विधि की भूमिका, प्रगतिशीलता में भारत का आर्थिक विकास, पर्यावरण प्रकृत, आनुवांसी प्रबंधन - अनुवांसी विचारण, पर्यावरण कृषि के विविध आग्राम, जल की सुधता की वर्तमान परिदृश्य में वैज्ञानिक प्रगतिशीलता व सामुदायिक, जलवायु परिवर्तन - एक वैश्विक चुनौती, कृषि की समस्या एवं समाधान - कोकरा जिले के संदर्भ में भारत में नदी-कृषि की प्रगति, सामुदायिक में प्राकृतिक सतत व सतत प्रगतिशीलता (सतत प्रगतिशीलता)।

प्रस्तुत पुस्तक शोधकर्ताओं, नौकरशाहों, वैज्ञानिकों, जनप्रतिष्ठानों, राष्ट्रीय प्राणी शास्त्रियों और पर्यावरण कार्यकर्ताओं के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों के संज्ञान में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों को भी लाभदायक होगी।

Shivam Book House (P) Ltd.
 T-12, GOM House, Shalji Ji Ka Rasta,
 Chaura Rasta, Jaipur-302 001
 Phone: 0141-2516754, 6826106/04
 Email: shivambookhouse@rediffmail.com

Price : 675/-



ISBN-978-93-84824-53-2